

नीलगरि जैवविधिता में बाघों की मृत्यु चतिनीय

प्रलमिस के लयि:

[बायोस्फीयर रज़िरव](#), नीलगरि बायोस्फीयर रज़िरव, [बाघ](#)

मेन्स के लयि:

बाघ संरक्षण का महत्त्व, संबंघति पहलें

[स्रोत: द हट्टि](#)

चरचा में क्यो?

तमलिनाडु का नीलगरि ज़िला जैवविधिता से समृद्ध है और यहाँ बड़ी संख्या में बाघ पाए जाते हैं। हालाँकि पिछले दो महीनों में इस ज़िले में वभिनिन कारणों से 10 बाघों की मौत हो चुकी है।

- बाघों की मृत्यु के परणामस्वरुप उनके संरक्षण एवं अस्तित्व को लेकर संरक्षणवादी और प्राधकार चतिति हैं।

नीलगरि में बाघों की मृत्यु का कारण:

- बाघों का उच्च घनत्व:
 - नीलगरि बायोस्फीयर रज़िरव के [मुदुमलाई-बांदीपुर-नागरहोल](#) परसिर में बाघों की संख्या व घनत्व अधकि होने के कारण काफी सारे बाघ मुकुरथी राष्ट्रीय उद्यान, नीलगरि तथा गुडलूर वन प्रभागों के आसपास के आवासों की ओर प्रस्थान कर रहे हैं, जसिके परणामत: [मानव-वनयजीव संघर्ष](#) के मामले में भी वृद्धि देखी गई है।
 - बाघों की संख्या में वृद्धि से स्पॉटेड डयिर और [इंडयिन गौर](#) जैसी शकिारी प्रजातयिों पर प्रभाव पड़ता है।
 - प्राकृतिक शकिार की कमी के कारण बाघ, पशुओं को नशाना बना सकते हैं, जसिसे [संघर्ष बढ़ सकता है](#) और परणामस्वरुप अधकि मौतें हो सकती हैं।
- भुखमरी और संक्रमण:
 - मुदुमलाई टाइगर रज़िरव के बफर जोन में बाघ के शावक मृत पाए गए, जनिकी उमर दो सप्ताह बताई जा रही है।
 - पोस्टमॉर्टम में [भुखमरी या नाभ संक्रमण](#) जैसे संभावति कारणों की आशंका जताई गई है।

बाघों की संख्या के खतरों को लेकर संरक्षणवादयिों की चतिताएँ:

- अवैध शकिार का खतरा: नीलगरि ज़िले में हाल ही में हुई शकिार की घटनाएँ बाघों के लयि लगातार खतरे को रेखांकति करती हैं।
 - आखेटक, बाघों को उनके मूल्यवान शारीरिक अंगों, जैसे [खाल](#), [हड्डयिों](#) और [अन्य अंगों](#) के लयि नशाना बनाते हैं, जसिसे आबादी के लयि गंभीर खतरा उत्पन्न होता है।
- ट्रैकिंग और सुरक्षा का अभाव: बाघों की आबादी को प्रभावी ढंग से ट्रैक करने और उनकी सुरक्षा करने में प्रत्यक्ष चुनौतयिों इसकी चतिताओं का कारण हैं।
 - इन प्रभावशाली जानवरों की नगिरानी और सुरक्षा करने में असमर्थता संरक्षणवादयिों की चतिताओं में से एक है।
- शकिार प्रबंधन का अभाव: संरक्षति क्षेत्रों में अपर्याप्त शकिार जनसंख्या प्रबंधन से असंतुलन उत्पन्न हो सकता है।
 - बाघों के लयि पर्याप्त शकिार सुनश्चिति करना उनके अस्तित्व के लयि आवश्यक है।
- पर्यावास का कषरण: कषरति आवास सीमति संसाधन प्रदान करते हैं, जसिसे बाघों को भोजन की तलाश में भटकने के लयि मजबूर होना पड़ता है।
 - मानवीय गतिविधयिों, वनों की कटाई और अतिक्रमण से बाघों के नवास स्थान को कषति पहुँचती हैं।

बाघ

रॉयल बंगाल टाइगर (*Panthera Tigris*) भारत का राष्ट्रीय पशु है।

बाघ की उप प्रजातियाँ

- * महाद्वीपीय (पैंथेरा टाइग्रिस टाइग्रिस)
- * सुंडा (पैंथेरा टाइग्रिस सोंडाइका)

प्राकृतिक अधिवास

उष्णकटिबंधीय वर्षावन,
सदाबहार वन,
समशीतोष्ण वन, मैंग्रोव
दलदल, घास के
मैदान और सवाना



देश जहाँ बाघ पाए जाते हैं

- 13 बाघ रेंज देश जहाँ यह प्राकृतिक रूप से पाए जाते हैं उनमें- भारत, नेपाल, भूटान, बांग्लादेश, म्याँमार, रूस, चीन, थाईलैंड, मलेशिया, इंडोनेशिया, कंबोडिया, लाओस और वियतनाम शामिल हैं।
- IUCN की नवीनतम रिपोर्ट के अनुसार, कंबोडिया, लाओस और वियतनाम में बाघ विलुप्त हो गए हैं।

संरक्षण की स्थिति

- IUCN रेड लिस्ट: लुप्तप्राय
- CITES: परिशिष्ट-I
- WPA 1972: अनुसूची-I

संरक्षण संबंधी प्रयास

- इंटरनेशनल बिग कैट्स एलायंस (IBCA): बाघ, शेर, तेंदुआ, हिम तेंदुआ, चीता, जैगुआर और प्यूमा नामक सात बड़ी बिल्लियों के संरक्षण के लिये (भारत द्वारा शुरू)
- Tx2 अभियान: WWF द्वारा आरंभ किया गया; 2022 तक बाघों की आबादी को दोगुना करने के लक्ष्य को इंगित करते हुए 'टाइगर टाइम्स 2' को संदर्भित करता था
- राष्ट्रीय बाघ संरक्षण प्राधिकरण (NTCA): WPA, 1972 के तहत गठित
- प्रोजेक्ट टाइगर : 1973 में लॉन्च किया गया
- बाघों की गणना : प्रत्येक 5 वर्ष में

खतरे

- आवास विखंडन
- अवैध शिकार
- मानव-वन्यजीव संघर्ष

भारत में बाघ

- भारत में इनकी संख्या सबसे अधिक है
 - ◆ वर्ष 2022 तक, भारत में बाघों की संख्या 3167 थी
 - ◆ मध्य भारतीय उच्च भूमि और पूर्वी घाट में इनकी सबसे बड़ी आबादी पाई गई है
- टाइगर रिजर्व: भारत में अब 53 टाइगर रिजर्व हैं
 - ◆ नवीनतम टाइगर रिजर्व उत्तर प्रदेश का रानीपुर है
 - ◆ नागार्जुन सागर (आंध्र प्रदेश) सबसे बड़ा टाइगर रिजर्व है जबकि ओरंग (असम) सबसे छोटा (कोर क्षेत्र) है।



//

नीलगरि बायोस्फीयर रिज़र्व:

■ परचियः

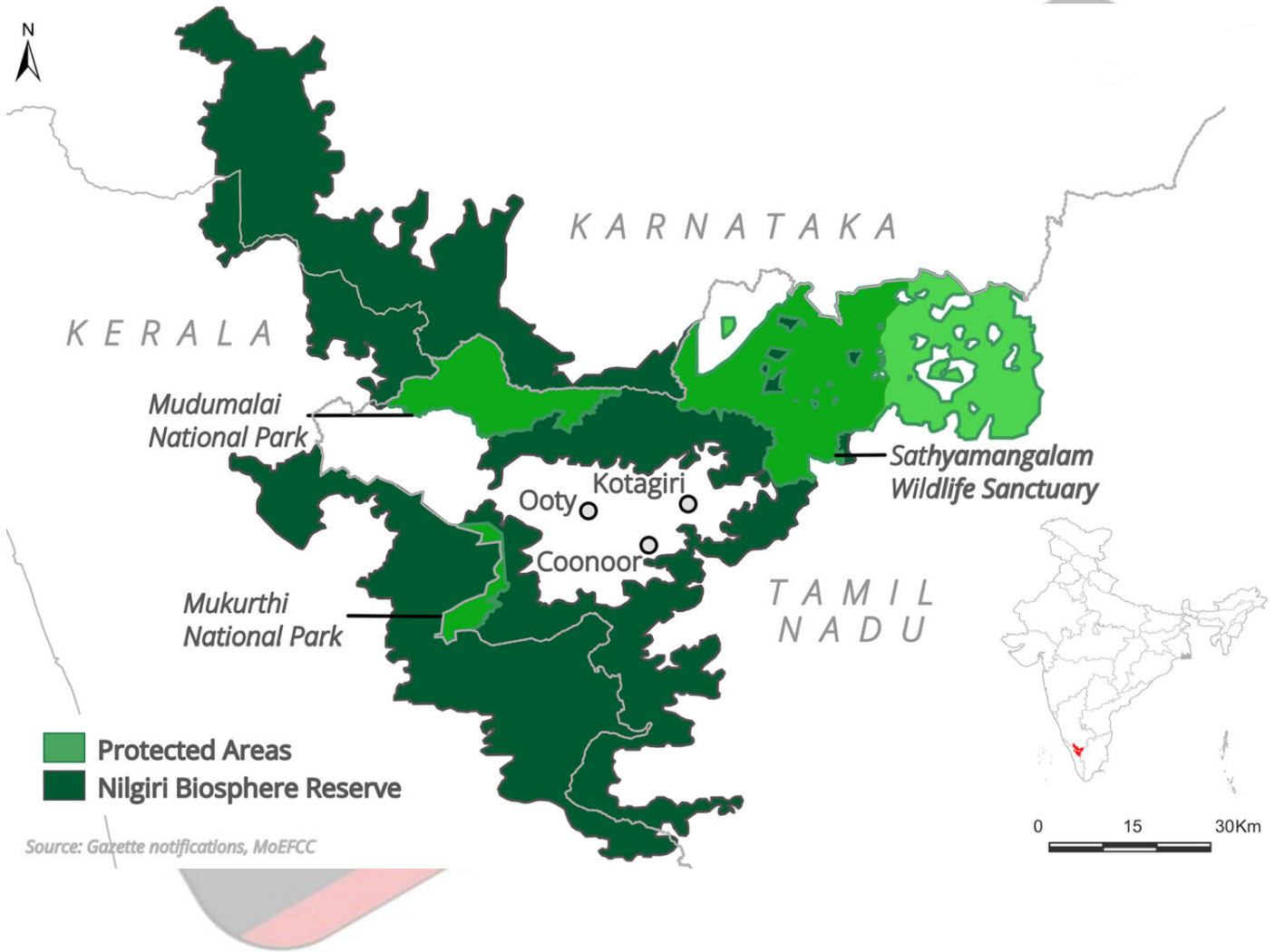
- नीलगरि शिबद, जसिका अरथ "नीले पहाड" है, तमलिनाडु में नीलगरि पठार में नीले फूलों से अच्छादति पहाडों (नीलकुरजी फूल) से लयिा गया है।
 - यह रज़िर्व तीन भारतीय राज्यों में फैला हुआ है: तमलिनाडु, कर्नाटक और केरल।
- यह युनेस्को के मानव और जीवमंडल कार्यक्रम के तहत भारत का पहला बायोस्फीयर रज़िर्व है, जो वर्ष 1986 में स्थापति कयिा गया था।
- यह आदयिान, अरनादान, कादर, कुरचियिन, कुरुमन और कुरुम्बा जैसे कई आदविासी समूहों का नविास स्थल है।
- यह वशि्व के अफ्रीकी-उष्णकटबिधीय और इंडो-मलायन जैवकि क्षेत्नों के संगम को चत्तिरति करता है।

■ जीव-जंतुः

- यहाँ नीलगरि तिहर, नीलगरि लंगूर, स्लेंडर लोरसि, काला हरिण, बाघ, गौर, भारतीय हाथी और नेवला जैसे जीव पाए जाते हैं।
- मीठे जल की मछलियों जैसे नीलगरि डेनथिो (*Devario neilgherriensis*), नीलगरि बारब (*Hypselobarbus dubuis*) और बोवेनी बारब (*Puntius bovanicus*) इस बायोस्फीयर रज़िर्व के लयि स्थानकि हैं।

■ NBR में संरक्षति क्षेत्तरः

- मुदुमलाई वन्यजीव अभयारण्य, वायनाड वन्यजीव अभयारण्य, बांदीपुर राष्ठीय उदयान, नागरहोल राष्ठीय उदयान, मुकुरथी राष्ठीय उदयान और साइलेंट वैली इस रज़िर्व के अंदर मौजूद संरक्षति क्षेत्तर हैं।



UPSC सविलि सेवा परीक्षा, वगित वर्ष के प्रश्न

??????????:

प्रश्न. नमिनलखिति बाघ आरक्षति क्षेत्तरों में "क्रांतकि बाघ आवास (Critical Tiger Habitat)" के अंतर्गत सबसे बडा क्षेत्तर कसिके पास है? (2020)

- (a) कॉरबेट
- (b) रणथंभौर

- (c) नागार्जुनसागर-श्रीसैलम
(d) सुंदरवन

उत्तर: (c)

PDF Refernece URL: <https://www.drishtias.com/hindi/printpdf/tiger-deaths-raise-concerns-in-nilgiris-biodiversity>

